# प्रज्ञा चक्षु कु0 आलोक सीतापुरी को एक और सम्मान

भारत के जाने माने कवि षायर भारतीय विकलांग भूषण एवं विकलांग रत्न से विभूषित प्रज्ञा चक्षु कु० आलोक सीतापुरी को जबलपुर मध्यप्रदेष में विगत २७ नवम्बर को, आयोजित अखिल भारतीय साहित्यकार एवं पत्रकार सम्मान समारोह २०१० के तत्वाधान में उनकी काव्यकृति 'लोक-गीतांजलि' के लिये अभिनन्दित एवं सम्मानित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी प्रज्ञानन्द जी महाराज महामंडलेश्वर प्रज्ञाधाम नई दिल्ली ने आलोक जी को प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्रम प्रदान करते हुये उन्हें वर्तमान में लोक अवधी का श्रेष्ठतम हस्ताक्षर बताते हुये उन्हें अपना आर्षीवचन दिया । समारोह की अध्यक्षता करते हुये डा० रत्नाकर पान्डेय, पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ साहित्यकार ने आलोक को प्रकशित की अभूतपूर्व देन उदधश्त करते हुये उन्हें विलक्षण प्रतिभा का धनी बताया हुये उनके सम्मान में निम्नलिखित काव्यमयी प्रतिक्रिया व्यक्त की :-

लोक गीत कविता गजल के
साहित्यिक थोक,
पुष्टि लेखनी से सतत फैलायें
आलोक।

सम्पूर्ण भारतसे २६ साहित्यकारों एवं पत्रकारों का सम्मान के यह नवे वर्श का आयोजन अध्यक्ष डा० गार्गीशरण मिश्र 'मराल' तथा महामंत्री आचार्य भगवत दुबे की संयुक्त श्रम साध्य साधना का परिणाम थी। सम्मान समारोह के बाद रात्रि १० बजे से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया जिसमें भी कुं० आलोक सीतापुरी ने अपनी रस सिद्व काव्य धारा से श्रोताओं की वाह वाही लूटी। उनके विशय में यहां यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि कु० आलोक अपनी २४ वर्ष की अवस्था में इन्टरमीडियट की षिक्षा प्राप्त करने के वक्त से ही आई हैमरेज के दुर्भाग्य रोग के कारण अपनी दोनो आंखें गंवा बैठे। परमात्मा ने नेत्रों सेज्योति लेने के बदले उनमें प्रज्ञा का अपरम्पार आलोक विभूशित कर दिया। संगीत में निपुणता प्राप्त करने के साथ ही ब्रेल लिपि के ज्ञान के सहारे उनकी प्रतिभा की आलोक किरणो से धरा को काव्य धारा से देदीप्यमान कर रहे हैं। अब तक इसी प्रतिभा के सहारे सकारात्मक पथ पर अग्रसारित इस पथिक ने अपनी झोली में षताधिक सम्मान पदको एवं अलंकरणों को संग्रहीत कर लिया है। उनकी रचनाओं का काफिला निरंतर अग्रसर है। 'विकलांग साथी' परिवार की उन्हें हार्दिक बधाइयाँ।